

# सप्तश्लोकी गीता

मुद्रक

कृष्णा प्रेस कोठी भाग

( श्रीनगर )

( ॐ )

## सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिं ॥ १ ॥

जो पुरुष ॐ ऐसे ( इस ) एक अक्षररूप ब्रह्मको उच्चारण करता हुआ ( और उसके अर्थस्वरूप ) मेरेको चिन्तन हुआ शरीरको त्याग कर जाता है वह पुरुष परमगतिको प्राप्त होता है ।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः

हे अन्तर्यामिन् ! यह योग्य ही है ( कि ) आपके नाम और प्रभावके कीर्तनसे जगत् अति हर्षित होता है और अनुरागको भी प्राप्त करता है ( तथा ) भयभीत हुए राक्षसलोग दिशाओंमें भागते हैं और सब सिद्ध गणोंके समुदाय नमस्कार करते हैं ।

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥

---

वह सब ओरसे हाथपैरवाला [ एवं ] सब ओरसे नेत्र, सिर और मुखवाला ( तथा ) सब ओरसे श्रोत्रवाला है, ( वह ) संसारमें सबको व्याप्त करके स्थित है ।

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥

---

जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता, सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म, सबके धारण-पोषण करनेवाले, अचिन्त्यस्वरूप, सूर्यके सदृश नित्य चेतन प्रकाशरूप, अविद्यासे अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमात्माको स्मरण करे ।

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥

---

आदि पुरुष परमेश्वररूप मूलवाले ब्रह्मरूप मुख्य शाखावाले संसाररूप पीपलके वृक्षको अविनाशी कहते हैं चारवेद

जिस के पन्ते वह वेदके तात्पर्यको जाननेवाला है ।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैररहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥

---

मैं ही सब प्राणियोंके हृदयमें अन्तर्यामीरूपसे स्थितहूँ मेरेसे ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन होता है और सब वेदोंद्वारा मै ही जरननेके योग्य हूँ वेदान्नका कर्ता और वेदोंको जाकनेवाला मैं ही हूं ।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी ।मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवत्मामानं मत्परायणः ॥ ७ ।

---

केवल मुक्त सच्चिदानन्दघन वासुदेव परमातमामें ही अन-

न्यप्रेमसे नित् निरन्तर अचल मनने वाला हो और मुझ परमेश्वरको ही श्रद्धाप्रेमसहित निष्कामभावसे गुण और प्रभावके श्रवण, कीर्तन, मनन और पठनपाठनद्वारा निर-रन्तर भजनेवाला हो तथा मेरा मन, वाणी और शरीरके द्वारा सर्वस्व अर्पण करके अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमसे विह्वलता पूर्वक पूजन करनेवाला हो और मुझ सर्वशक्तिमान् विभूति बल ऐश्वर्य माधुर्य गम्भीरता उदारता वात्सल्य और सौहृद आदि गुणोंसे सम्पन्न सबके आश्रयरूप वासुदेवको विनयभावपूर्वक भक्तिसहित साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम कर, इस प्रकार मेरी शरण आप्त

हुआ तू आत्माको मेरेमें एकीभाव करके मेरे शरण
को ही प्राप्त होवगा ॥




I.T.F